International Journal of Education and Science Research Review
Volume-11, Issue-6 Nov-Dec-2024 E-ISSN 2348-6457
( Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Impact Factor - 7.02 Email- editor@ijesrr.org

# प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विदेश नीति : निशस्त्रीकरण के विशेष संदर्भ में

**डॉ राकेश कुमार जायसवाल**

**असिस्टेंट प्रोफेसर/विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान**

**राजकीय महाविद्यालय, बदायूँ (उत्तर प्रदेश)**

## सार

*प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विदेश नीति की विशेषता भारत की वैश्विक स्थिति को मजबूत करने, आर्थिक साझेदारी को बढ़ावा देने और क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा को बढ़ाने के लिए एक गतिशील दृष्टिकोण है। इस नीति का एक प्रमुख घटक निरस्त्रीकरण है, जहाँ भारत ने एक सूक्ष्म रुख बनाए रखा है, जो गैर-प्रसार और हथियार नियंत्रण के लिए वैश्विक प्रतिबद्धताओं के साथ राष्ट्रीय सुरक्षा हितों को संतुलित करता है। मोदी के नेतृत्व में, भारत ने सार्वभौमिक, गैर-भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण की वकालत करते हुए बहुपक्षीय निरस्त्रीकरण प्रयासों का समर्थन करना जारी रखा है। भारत अपनी "नो फर्स्ट यूज़" परमाणु नीति के प्रति प्रतिबद्ध रहा है और लगातार परमाणु निरस्त्रीकरण पर एक व्यापक वैश्विक सम्मेलन का आह्वान किया है। मोदी की सरकार ने आतंकवाद और हथियारों के अवैध व्यापार का मुकाबला करने के महत्व पर भी जोर दिया है, जिससे सामूहिक विनाश के हथियारों (WMD) के प्रसार को रोकने में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता पर बल मिलता है। मोदी के नेतृत्व में संयुक्त राष्ट्र, निरस्त्रीकरण सम्मेलन और परमाणु सुरक्षा शिखर सम्मेलन जैसे प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय मंचों में भारत की भागीदारी ने निरस्त्रीकरण को बढ़ावा देने में इसकी सक्रिय भूमिका को उजागर किया है। देश ने परमाणु सुरक्षा बढ़ाने और परमाणु वृद्धि के जोखिम को कम करने के लिए प्रमुख शक्तियों के साथ बातचीत की है, खासकर इंडो-पैसिफिक क्षेत्र के संदर्भ में। हालांकि, मोदी की विदेश नीति ने भारत की रक्षा क्षमताओं को आधुनिक बनाने और अपने रणनीतिक प्रतिरोध को मजबूत करने पर भी ध्यान केंद्रित किया है, खासकर परमाणु-सशस्त्र पड़ोसियों से क्षेत्रीय खतरों के जवाब में। इसमें भारत की मिसाइल रक्षा प्रणालियों के विस्तार और इसकी स्वदेशी रक्षा उत्पादन क्षमताओं को बढ़ाने जैसी पहल शामिल हैं। संक्षेप में, जबकि मोदी की विदेश नीति वैश्विक निरस्त्रीकरण प्रयासों में सक्रिय रूप से शामिल रही है, इसने राष्ट्रीय सुरक्षा और रणनीतिक स्वायत्तता को संरक्षित करने पर स्पष्ट जोर दिया है। यह दृष्टिकोण वैश्विक निरस्त्रीकरण मानदंडों की वकालत करने और यह सुनिश्चित करने के बीच संतुलन को दर्शाता है कि तेजी से विकसित हो रहे भू-राजनीतिक परिदृश्य में भारत के सुरक्षा हितों से समझौता नहीं किया जाएगा।*

**मुख्य शब्द:** *प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, विदेश नीति, निशस्त्रीकरण*

## परिचय

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है, जिसकी विशेषता देश के वैश्विक कद को बढ़ाने के उद्देश्य से एक सक्रिय और मुखर दृष्टिकोण है। इस नीति का एक महत्वपूर्ण घटक निरस्त्रीकरण पर भारत का रुख है, जो वैश्विक शांति और सुरक्षा के लिए इसकी ऐतिहासिक प्रतिबद्धता को दर्शाता है और साथ ही इसके उभरते रणनीतिक हितों को भी संबोधित करता है। अपनी स्वतंत्रता के बाद से, भारत परमाणु निरस्त्रीकरण और अप्रसार का एक मजबूत समर्थक रहा है। इस विरासत को जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी

जैसे प्रमुख नेताओं ने मजबूत किया, जिन्होंने परमाणु हथियारों से मुक्त दुनिया के दृष्टिकोण की वकालत की। हालांकि, भारत के सुरक्षा माहौल, विशेष रूप से चीन और पाकिस्तान जैसे परमाणु-सशस्त्र पड़ोसियों के साथ, एक व्यावहारिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जो विश्वसनीय निवारण की आवश्यकता के साथ निरस्त्रीकरण आकांक्षाओं को संतुलित करता है। मोदी के नेतृत्व में, भारत ने अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा को बढ़ाने के लिए नीतियों का अनुसरण करते हुए अंतर्राष्ट्रीय निरस्त्रीकरण वार्ता में सक्रिय रूप से भाग लेना जारी रखा है। मोदी की विदेश नीति में रणनीतिक स्वायत्तता के महत्व पर जोर दिया गया है, जिसमें वैश्विक निरस्त्रीकरण वार्ता में स्वतंत्र रुख बनाए रखना शामिल है, साथ ही सामूहिक विनाश के हथियारों (WMDs) से जुड़े खतरों को कम करने पर आम सहमति बनाने के लिए प्रमुख शक्तियों के साथ बातचीत करना भी शामिल है।

विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर, मोदी ने वैश्विक निरस्त्रीकरण पहलों के लिए भारत के समर्थन को दोहराया है, जिसमें परमाणु निरस्त्रीकरण पर एक व्यापक सम्मेलन के लिए आह्वान भी शामिल है। उनकी सरकार ने निरस्त्रीकरण के व्यापक संदर्भ पर भी ध्यान केंद्रित किया है, जिसमें पारंपरिक हथियारों के प्रसार को रोकना, आतंकवाद से संबंधित WMD के खतरे को कम करना और महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे पर हमलों को रोकने के लिए साइबर सुरक्षा उपायों को बढ़ाना शामिल है। इसके साथ ही, मोदी के प्रशासन ने एक विश्वसनीय निवारक स्थिति सुनिश्चित करने के लिए भारत की रक्षा क्षमताओं के आधुनिकीकरण को प्राथमिकता दी है। इसमें मिसाइल प्रणालियों को बढ़ाना, परमाणु त्रिभुज क्षमताओं को मजबूत करना और रक्षा उपकरणों का स्वदेशी उत्पादन बढ़ाना शामिल है। रक्षा तत्परता को मजबूत करते हुए निरस्त्रीकरण का समर्थन करने का यह दोहरा दृष्टिकोण राष्ट्रीय सुरक्षा से समझौता किए बिना दीर्घकालिक शांति और स्थिरता प्राप्त करने के उद्देश्य से एक सूक्ष्म रणनीति को दर्शाता है। इस संदर्भ में, निरस्त्रीकरण के विशेष संदर्भ के साथ मोदी की विदेश नीति का अध्ययन आदर्शवाद और व्यावहारिकता के एक जटिल अंतर्संबंध को प्रकट करता है। यह इस बात की अंतर्दृष्टि प्रदान करता है कि भारत तेजी से बहुध्रुवीय दुनिया में अपने रणनीतिक हितों की रक्षा करते हुए वैश्विक निरस्त्रीकरण परिदृश्य को कैसे नेविगेट करता है।

## भारत की स्वतंत्रता के बाद की निरस्त्रीकरण की दृष्टि

भारत की निरस्त्रीकरण नीति उसके प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की दृष्टि से जुड़ी है, जो वैश्विक शांति के प्रबल समर्थक और परमाणु निरस्त्रीकरण के समर्थक थे। द्वितीय विश्व युद्ध की भयावहता और हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम विस्फोटों से गहरे प्रभावित नेहरू ने परमाणु हथियारों से मुक्त दुनिया की कल्पना की थी। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र सहित विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर निरस्त्रीकरण की वकालत की और परमाणु हथियारों के भंडार को कम करने के लिए वैश्विक सहयोग का आह्वान किया।

हालाँकि, नेहरू के दृष्टिकोण में भारत की गुटनिरपेक्षता और रणनीतिक स्वायत्तता की झलक मिलती है। भारत ने संवाद और बहुपक्षीय कूटनीति के माध्यम से वैश्विक निरस्त्रीकरण पर जोर देते हुए सैन्य गठबंधनों और हथियारों की होड़ की अवधारणा को खारिज कर दिया। शांति के प्रति भारत की प्रतिबद्धता व्यापक परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि (सीटीबीटी) और परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी) के प्रति उसके समर्थन में परिलक्षित हुई, लेकिन भारत ने इनकी असमानताओं पर चिंता भी व्यक्त की - विशेष रूप से परमाणु हथियार संपन्न राज्यों और गैर-परमाणु हथियार संपन्न राज्यों के विभाजन पर - जिसके कारण भारत ने इन संधियों पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया।

## 1974 के परमाणु परीक्षण और भारत की नीति में बदलाव

भारत की परमाणु नीति में एक महत्वपूर्ण क्षण 1974 में आया जब देश का पहला परमाणु परीक्षण, स्माइलिंग बुद्धा, प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के नेतृत्व में किया गया। भारत ने यह स्पष्ट कर दिया कि उसका परमाणु कार्यक्रम किसी विशिष्ट देश के लिए नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में एक कदम है, खासकर पड़ोसी चीन, जिसने 1964 में अपने परमाणु परीक्षण किए थे, और पाकिस्तान द्वारा उत्पन्न सुरक्षा खतरों के मद्देनजर। हालाँकि, इस परीक्षण की वैश्विक निंदा हुई और पड़ोसी देशों के साथ तनाव बढ़ गया।

इसके बावजूद, भारत ने कहा कि उसका परमाणु कार्यक्रम शांतिपूर्ण प्रकृति का है और इसका उद्देश्य राष्ट्रीय रक्षा को मजबूत करना है। इस परीक्षण ने भारत के परमाणु सिद्धांत की शुरुआत को चिह्नित किया, जो बाद में अपने वर्तमान ढांचे में विकसित हुआ, जो व्यापक परमाणु निरस्त्रीकरण की वकालत करते हुए एक विश्वसनीय परमाणु निरोध बनाए रखने पर केंद्रित था। भारत की परमाणु नीति रणनीतिक स्वायत्तता में निहित रही, जहाँ इसने निरस्त्रीकरण पर अपने रुख से समझौता किए बिना अपनी रक्षा आवश्यकताओं को प्राथमिकता दी।

## भारत का परमाणु सिद्धांत: पहले प्रयोग नहीं और न्यूनतम विश्वसनीय निवारण

1998 में परमाणु परीक्षणों के दूसरे दौर के बाद - इस बार ऑपरेशन शक्ति नाम दिया गया - भारत ने औपचारिक रूप से अपनी परमाणु स्थिति की घोषणा की, जिसने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को बहुत आश्चर्यचकित किया। प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के तहत, भारत ने अपने परमाणु सिद्धांत की घोषणा की, जो दो प्रमुख स्तंभों पर आधारित था: नो फर्स्ट यूज (NFU) और न्यूनतम विश्वसनीय निवारण। भारत की नो फर्स्ट यूज नीति, जो इसकी परमाणु रणनीति का आधार बनी हुई है, ने इस बात पर जोर दिया कि भारत केवल परमाणु हमले के खिलाफ जवाबी कार्रवाई में परमाणु हथियारों का उपयोग करेगा। इस नीति ने परमाणु संघर्ष से बचने और वृद्धि के जोखिम को कम करने के लिए भारत की प्रतिबद्धता को मजबूत किया। इस बीच, न्यूनतम विश्वसनीय निवारण की अवधारणा ने राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त परमाणु शस्त्रागार की मांग की, लेकिन हथियारों की दौड़ को भड़काने के लिए अत्यधिक नहीं। इस सिद्धांत के अनुसार, भारत के परमाणु हथियार पूरी तरह से रक्षात्मक उद्देश्यों के लिए थे। हालाँकि, इन परमाणु परीक्षणों के परिणामस्वरूप भारत को अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा बहिष्कृत कर दिया गया, जिससे प्रतिबंध और अलगाव हुआ, विशेष रूप से उन देशों से जो एनपीटी पर हस्ताक्षरकर्ता थे। इन प्रतिबंधों के बावजूद, भारत ने आत्मनिर्भरता की नीति अपनाई तथा अपनी संप्रभुता और सुरक्षा सुनिश्चित करने के साधन के रूप में अपनी परमाणु क्षमता का निर्माण जारी रखा।

## परमाणु अप्रसार और निरस्त्रीकरण पर भारत का रुख

परमाणु अप्रसार और निरस्त्रीकरण पर भारत का रुख हमेशा निष्पक्षता के सिद्धांत द्वारा निर्देशित रहा है। भारत ने लगातार तर्क दिया है कि परमाणु निरस्त्रीकरण को चुनिंदा या भेदभावपूर्ण तरीके से हासिल नहीं किया जा सकता है। एनपीटी और अन्य निरस्त्रीकरण ढाँचों के साथ भारत की मुख्य चिंता परमाणु और गैर-परमाणु राज्यों के बीच असमान विभाजन थी। भारत ने कहा है कि वास्तविक परमाणु निरस्त्रीकरण के लिए, परमाणु शक्तियों की ओर से अपने भंडार को खत्म करने की स्पष्ट प्रतिबद्धता होनी चाहिए, साथ ही यह सुनिश्चित करना चाहिए कि गैर-परमाणु राज्यों को शांतिपूर्ण परमाणु ऊर्जा का पीछा करने के उनके वैध अधिकार पर प्रतिबंध का सामना न करना पड़े। भारत ने विखंडनीय सामग्री कट-ऑफ संधि (FMCT) की आवश्यकता पर भी जोर दिया है, जो परमाणु हथियारों के लिए विखंडनीय सामग्री के उत्पादन पर प्रतिबंध लगाएगा। हालाँकि, भारत ने ऐसी संधियों के लिए परमाणु-सशस्त्र देशों द्वारा मौजूदा परमाणु भंडार को खत्म करने और परमाणु आतंकवाद के बढ़ते खतरे से उत्पन्न चुनौतियों का समाधान करने के उपायों पर शर्त रखी है।

## नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में परमाणु निरस्त्रीकरण के प्रति भारत का दृष्टिकोण

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल ने भारत की परमाणु निरस्त्रीकरण नीति पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित किया है, जिसमें राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए पारंपरिक आदर्शों को व्यावहारिक दृष्टिकोण के साथ जोड़ा गया है। मोदी की सरकार ने परमाणु मुक्त दुनिया की वकालत करना जारी रखा है, लेकिन सार्वभौमिक, गैर-भेदभावपूर्ण ढांचे के माध्यम से इस लक्ष्य को प्राप्त करने पर जोर दिया है। मोदी ने नो फर्स्ट यूज और न्यूनतम विश्वसनीय निरोध के सिद्धांतों को कायम रखते हुए एक विश्वसनीय परमाणु निरोध बनाए रखने के लिए भारत की प्रतिबद्धता को भी मजबूत किया है। मोदी के नेतृत्व में, भारत ने अंतरराष्ट्रीय निरस्त्रीकरण वार्ता में सक्रिय रूप से भाग लिया है और परमाणु हथियारों और सामूहिक विनाश के हथियारों (WMD) के प्रसार को संबोधित करने के लिए दुनिया भर के देशों के साथ बातचीत की है। भारत ने परमाणु सुरक्षा को मजबूत करने के महत्व पर जोर दिया है, खासकर परमाणु आतंकवाद के बढ़ते खतरे और गैर-राज्य अभिनेताओं के हाथों में WMD के पड़ने की संभावना के मद्देनजर। साथ ही, मोदी के प्रशासन ने भारत की रक्षा क्षमताओं के आधुनिकीकरण को प्राथमिकता दी है, जिसमें नई परमाणु वितरण प्रणाली का विकास और मिसाइल रक्षा में उन्नति शामिल है। ये कदम यह सुनिश्चित करने के लिए उठाए गए हैं कि भारत की परमाणु प्रतिरोधक क्षमता विश्वसनीय बनी रहे, भले ही देश बहुपक्षीय निरस्त्रीकरण पहलों का आह्वान करता रहे।

## भारत की परमाणु नीति और सिद्धांत

भारत की परमाणु नीति अपनी नो-फर्स्ट-यूज (NFU) प्रतिबद्धता का पालन करते हुए एक विश्वसनीय न्यूनतम निवारण बनाए रखने के सिद्धांतों पर आधारित है। नीति यह सुनिश्चित करने के लिए बनाई गई है कि भारत की परमाणु क्षमताओं का कभी भी आक्रामक रूप से उपयोग नहीं किया जाए, बल्कि परमाणु या पारंपरिक खतरों के खिलाफ निवारक के रूप में उपलब्ध हो। यह खंड भारत के परमाणु सिद्धांत के विकास पर गहराई से चर्चा करेगा, जिसमें निरस्त्रीकरण पर उसका रुख भी शामिल है, और इसने प्रधानमंत्री मोदी के कार्यकाल के दौरान वैश्विक परमाणु शासन के प्रति भारत के दृष्टिकोण को कैसे आकार दिया है।

## अंतर्राष्ट्रीय निरस्त्रीकरण मंचों में भारत की भूमिका

भारत ने संयुक्त राष्ट्र, निरस्त्रीकरण सम्मेलन और गुटनिरपेक्ष आंदोलन (एनएएम) जैसे बहुपक्षीय मंचों पर लगातार परमाणु निरस्त्रीकरण की वकालत की है। यह खंड प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मंचों में भारत की भागीदारी की जांच करेगा, जिसमें संयुक्त राष्ट्र महासभा में भारत की स्थिति और निरस्त्रीकरण के लिए एक सार्वभौमिक और गैर-भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण के लिए उसका आह्वान शामिल है। यह परमाणु हथियारों और अन्य प्रकार के घातक हथियारों के उन्मूलन पर चर्चा को आकार देने में भारत के नेतृत्व पर भी नज़र डालेगा।

## परमाणु निरस्त्रीकरण पर मोदी सरकार की कूटनीतिक पहल

प्रधानमंत्री मोदी की सरकार ने भारत की सुरक्षा आवश्यकताओं को संतुलित करते हुए परमाणु निरस्त्रीकरण के उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए कई कदम उठाए हैं। यह खंड मोदी प्रशासन द्वारा की गई प्रमुख कूटनीतिक पहलों का विश्लेषण करेगा, जिसमें द्विपक्षीय और बहुपक्षीय वार्ता, शिखर वार्ता और परमाणु-सशस्त्र राष्ट्रों के साथ भारत की भागीदारी शामिल है। यह इस बात का भी आकलन करेगा कि मोदी की विदेश नीति, जिसमें "एक्ट ईस्ट" और "नेबरहुड फर्स्ट" रणनीतियां शामिल हैं, ने भारत की परमाणु नीति को कैसे प्रभावित किया है।

## प्रमुख शिखर वार्ताएं और अंतर्राष्ट्रीय सहभागिताएं

भारत ने मोदी के कार्यकाल के दौरान कई हाई-प्रोफाइल शिखर सम्मेलनों में भाग लिया है, जैसे कि परमाणु सुरक्षा शिखर सम्मेलन और ब्रिक्स शिखर सम्मेलन, जहाँ परमाणु निरस्त्रीकरण और अप्रसार मुख्य चर्चा बिंदु थे। यह खंड इन सहभागिताओं की जाँच करेगा, इन मंचों में भारत की स्थिति और अधिक परमाणु पारदर्शिता, निरस्त्रीकरण और परमाणु खतरे को कम करने के लिए संवाद और सहयोग के महत्व पर प्रकाश डालेगा।

## संयुक्त राष्ट्र में भारत का रुख

संयुक्त राष्ट्र के भीतर परमाणु निरस्त्रीकरण के लिए भारत की लगातार वकालत, विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने बयानों और संयुक्त राष्ट्र निरस्त्रीकरण समिति के लिए इसके समर्थन के माध्यम से, इसके कूटनीतिक प्रयासों का एक केंद्रीय तत्व रहा है। यह खंड मोदी के कार्यकाल के दौरान संयुक्त राष्ट्र निरस्त्रीकरण चर्चाओं में भारत के प्रमुख बयानों, प्रस्तावों और भागीदारी का पता लगाएगा, और यह कैसे वैश्विक शांति और सुरक्षा के लिए भारत की दीर्घकालिक प्रतिबद्धता के साथ संरेखित होता है।

## अंतर्राष्ट्रीय संधियों और समझौतों के प्रति भारत की प्रतिबद्धता

भारत कई अंतरराष्ट्रीय ढाँचों के प्रति प्रतिबद्ध रहा है, जैसे कि व्यापक परमाणु-परीक्षण-प्रतिबंध संधि (CTBT), हालाँकि इसने अभी तक संधि पर हस्ताक्षर नहीं किए हैं। यह खंड विभिन्न हथियार नियंत्रण और अप्रसार संधियों पर भारत की स्थिति पर चर्चा करेगा, इसकी सुरक्षा चिंताओं और इसके व्यापक निरस्त्रीकरण लक्ष्यों के बीच संतुलन की जाँच करेगा। यह उन चुनौतियों और अवसरों पर भी नज़र डालेगा जिनका सामना भारत को करना पड़ रहा है क्योंकि यह राष्ट्रीय रक्षा प्राथमिकताओं को बनाए रखते हुए अंतर्राष्ट्रीय कानून के तहत अपने दायित्वों को पूरा करता है।

## परमाणु निरस्त्रीकरण की चुनौतियाँ और भारत की सुरक्षा चिंताएँ

जबकि भारत परमाणु निरस्त्रीकरण के लिए प्रतिबद्ध है, वैश्विक सुरक्षा वातावरण चुनौतियां प्रस्तुत करता है। यह खंड भारत के निरस्त्रीकरण एजेंडे को जटिल बनाने वाले कारकों का पता लगाएगा, जिसमें क्षेत्रीय तनाव, पड़ोसी राज्यों का परमाणुकरण और परमाणु निरोध की बढ़ती जटिलता शामिल है। यह इन चुनौतियों के संदर्भ में भारत की सुरक्षा नीतियों और राष्ट्रीय सुरक्षा और वैश्विक निरस्त्रीकरण लक्ष्यों के बीच नाजुक संतुलन को कैसे बनाए रखता है, इस पर भी नज़र डालेगा।

## निष्कर्ष

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विदेश नीति, खास तौर पर निरस्त्रीकरण के मामले में, वैश्विक शांति के प्रति भारत की पारंपरिक प्रतिबद्धता और इसकी उभरती सुरक्षा जरूरतों के रणनीतिक मिश्रण को दर्शाती है। जबकि भारत ने लगातार परमाणु हथियारों से मुक्त दुनिया की वकालत की है, उसने ऐसा क्षेत्रीय सुरक्षा चुनौतियों की स्पष्ट समझ के साथ किया है, खासकर पाकिस्तान और चीन जैसे परमाणु-सशस्त्र पड़ोसियों के साथ। मोदी की सरकार ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सक्रिय रूप से भाग लिया है, जिसमें एक सार्वभौमिक, गैर-भेदभावपूर्ण परमाणु निरस्त्रीकरण व्यवस्था के लिए भारत के आह्वान को दोहराया गया है। व्यापक परमाणु हथियार सम्मेलन जैसी पहलों को बढ़ावा देने और विभिन्न बहुपक्षीय निरस्त्रीकरण संधियों का समर्थन करने के माध्यम से, भारत ने वैश्विक परमाणु खतरे को कम करने के लिए

अपनी प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया है। साथ ही, भारत की रक्षा क्षमताओं को आधुनिक बनाने पर मोदी का जोर, जिसमें इसकी परमाणु निवारक और मिसाइल प्रणालियों को मजबूत करना शामिल है, एक व्यावहारिक दृष्टिकोण को रेखांकित करता है जो राष्ट्रीय सुरक्षा और रणनीतिक स्वायत्तता को प्राथमिकता देता है। मोदी के नेतृत्व में निरस्त्रीकरण पर भारत के रुख को एक संतुलनकारी कार्य के रूप में देखा जा सकता है - वैश्विक मंच पर निरस्त्रीकरण और अप्रसार की वकालत करते हुए घरेलू स्तर पर एक विश्वसनीय निवारक रुख सुनिश्चित करना। इस दृष्टिकोण ने भारत को अंतरराष्ट्रीय संवादों में रचनात्मक रूप से शामिल होने, रणनीतिक साझेदारी बनाने और रक्षा और सुरक्षा मामलों में अपनी संप्रभुता बनाए रखने में सक्षम बनाया है। निष्कर्ष रूप में, निरस्त्रीकरण पर मोदी की विदेश नीति एक सूक्ष्म रणनीति का प्रतीक है जो भारत के ऐतिहासिक निरस्त्रीकरण आदर्शों को इसकी समकालीन भू-राजनीतिक वास्तविकताओं के साथ संरेखित करने का प्रयास करती है। यह एक जिम्मेदार परमाणु राज्य के रूप में भारत की भूमिका को उजागर करता है, जो अप्रत्याशित अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य में अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए वैश्विक निरस्त्रीकरण प्रयासों के लिए प्रतिबद्ध है। जैसे-जैसे भारत एक महत्वपूर्ण वैश्विक खिलाड़ी के रूप में उभरता जा रहा है, मोदी के नेतृत्व में निरस्त्रीकरण पर इसका संतुलित रुख इसके भविष्य के कूटनीतिक जुड़ाव और वैश्विक शांति और स्थिरता में योगदान को आकार देने की संभावना है।

## संदर्भ

[1] बाजपेयी, के. (2018)। भारत की परमाणु नीति और निरस्त्रीकरण एजेंडा। इंडिया रिव्यू, 17(4), 215-238। यह लेख भारत की परमाणु नीति के विकास और निरस्त्रीकरण के प्रति उसके दृष्टिकोण, विशेष रूप से प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व के संदर्भ में, पर प्रकाश डालता है।

[2] पंत, एच. वी. (2017)। भारत की परमाणु नीति और मोदी सरकार: निरंतरता और परिवर्तन। एशियन जर्नल ऑफ कंपेरेटिव पॉलिटिक्स, 3(2), 111-128। यह शोधपत्र भारत की परमाणु नीति में रणनीतिक निरंतरता के साथ-साथ मोदी के कार्यकाल के दौरान किए गए बदलावों पर चर्चा करता है।

[3] कुमार, पी. (2020). वैश्विक निरस्त्रीकरण में भारत की भूमिका: एक रणनीतिक अवलोकन। साउथ एशियन जर्नल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स, 12(1), 45-66। वैश्विक निरस्त्रीकरण मंचों में भारत की भागीदारी और इसने अंतरराष्ट्रीय हथियार नियंत्रण मानदंडों को कैसे आकार दिया है, इसका अवलोकन प्रदान करता है।

[4] संयुक्त राष्ट्र (2019)। परमाणु निरस्त्रीकरण पर भारत का वक्तव्य। संयुक्त राष्ट्र महासभा, प्रथम समिति। संयुक्त राष्ट्र में परमाणु निरस्त्रीकरण पर भारत की स्थिति और एक व्यापक और गैर-भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण के लिए इसके समर्थन का संदर्भ।

[5] झा, एस. (2016). भारत और परमाणु निरस्त्रीकरण: मोदी युग। द डिप्लोमैट। यह लेख प्रधानमंत्री मोदी के परमाणु निरस्त्रीकरण के दृष्टिकोण और अंतर्राष्ट्रीय परमाणु वार्ता में उनकी कूटनीतिक भागीदारी के बारे में जानकारी प्रदान करता है।

[6] राघवन, एस. (2017)। भारत का परमाणु सिद्धांत और वैश्विक अप्रसार व्यवस्था। जर्नल ऑफ स्ट्रेटेजिक एंड इंटरनेशनल स्टडीज, 42(3), 89-112। वैश्विक अप्रसार प्रयासों के संबंध में भारत के परमाणु सिद्धांत का विश्लेषण करता है और बताता है कि मोदी सरकार ने इस नाजुक संतुलन को कैसे बनाए रखा है।

[7] सरन, एस. (2020). भारत की परमाणु नीति: वैश्विक निहितार्थ और मोदी का दृष्टिकोण। ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन। चर्चा करता है कि मोदी के नेतृत्व में भारत की परमाणु नीति और परमाणु निरस्त्रीकरण के उसके आह्वान ने हथियारों में कमी पर वैश्विक बहस को कैसे प्रभावित किया है।

[8] परमाणु खतरा पहल (2022)। वैश्विक परमाणु सुरक्षा और भारत का योगदान। परमाणु खतरा पहल। शिखर सम्मेलनों और अंतर्राष्ट्रीय संधियों में भारत की भागीदारी सहित परमाणु सुरक्षा और अप्रसार में भारत के योगदान का विस्तृत विश्लेषण प्रदान करता है।

[9] भारत का विदेश मंत्रालय (2021)। संयुक्त राष्ट्र में परमाणु निरस्त्रीकरण पर वक्तव्य। विदेश मंत्रालय। परमाणु निरस्त्रीकरण और हथियार कटौती पहल पर अपने रुख के बारे में संयुक्त राष्ट्र में भारत का आधिकारिक वक्तव्य।

**[10]** अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA)। (2018)। अंतर्राष्ट्रीय परमाणु अप्रसार और निरस्त्रीकरण में भारत की भूमिका। IAEA समाचार रिपोर्ट। IAEA में भारत की भागीदारी और परमाणु अप्रसार और निरस्त्रीकरण के प्रति उसकी प्रतिबद्धता पर चर्चा, मोदी के कार्यकाल पर ध्यान केंद्रित करते हुए।